• पूजा...

मंदिर में इस दिशा में रखें भगवान की मूर्ति

हमारे घर में पूजा का स्थान बहुत अहम होता है। घरों अगर ज्यादा जगह है तो पूजा के लिए अलग कमरा होता है पर आजकल के दौर में शहरों में छोटे घरों में रहने वाले कमरे या रसोई में छोटी सी जगह बना कर वहां पर पूजा स्थल बना लेते हैं। अगनया घर बना रहे हैं तो यह जरूरी है कि आप अलग से पूजा का स्थल जरूर बनाएं। पूजा स्थल बनाते समय आप वास्तु का ख्याल जरूर रखें। पूजा घर बनने के बाद उसमें भगवान की प्रतिमा का मुख सही दिशा में होना बहुत जरूरी है। अगर भगवान की प्रतिमा का मुख सही दिशा में नहीं है तो यह वास्तु दोष का कारण बन सकता है। इस संबंध में आप को वास्तु के नियमों की जानकारी होनी बहुत जरूरी है।

▶ घर पर पूजा स्थल अगर सही दिशा में हो और उसमें भगवान की प्रतिमा का मुख भी सही दिशा में हो तो आपके घर में सुख-शांति ही नहीं बल्कि सकारत्मक ऊर्जा का भी संचार होता है। इससे घर में रहने वाले लोगों के बीच हर सुबह एक नई ऊर्जा और उत्साह का संचार करता है। ये आपकी अंतरात्मा और शरीर को आत्मबल भी देता है।

▶ वास्तु के अनुसार घर में मंदिर या पूजा घर में भगवान की मूर्ति या चित्र लगाने की दिशा तय है। यह दिशा पूजा घर के पूर्व या उत्तर दिशा में होनी चाहिए। ईश्वर की मूर्ति या तस्वीर का मुंह कभी भी उत्तर की ओर न करें, अन्यथा पूजा करने वाले का मुंह दक्षिण की ओर होगा। और दक्षिण दिशा अशुभ होती है। साथ ही कभी भी दक्षिण दिशा में पूजा घर भी नहीं बनना चाहिए।

▶ जगह की कमी के कारण कई लोग रसोई में मंदिर बना लेते हैं। वास्तु के अनुसार यह सही नहीं माना जाता। सीढ़ियों के नीचे या फिर तहखाने में भी मंदिर का होना सही नहीं माना जाता।

▶ मंदिर में अगर एक ही भगवान की दो तस्वीरें हैं तो उन्हें आमने- सामने न रखें। इसके अलावा मंदिर में भगवान की मूर्तियों के बीच कमसे कम एक इंच की दूरी रखे।

• मंदिर के...

खंभों से निकलती है संगीत की धुन...

भारत के तमिलनाडु राज्य के तिरुनेलवेली में नेल्लईअप्पार मंदिर है। इस मंदिर में शिव की प्रतिमा है, जिसे 700 ई. पू. में बनाया गया है। यह मंदिर अपनी खूबसूरती के लिए पूरी दुनिया में प्रसिद्ध है। इस मंदिर को संगीत स्तंभ भी कहा जाता है, क्योंकि इस मंदिर में स्थित पत्थर के खंभों से आप मधुर संगीत की धुन निकाल सकते हैं। तिरुनेलवेली मंदिर का निर्माण 7वीं शताब्दी में हुई है और इसका निर्माण पांड्यों ने किया था।

यह मंदिर 14 एकड़ में फैला है और इसका मुख्य द्वार 850 फीट लंबा और 756 फीट चौड़ा है। जबकि संगीत खंभों का निर्माण निंदरेसर नेदुमारन ने किया था, जो कि तत्कालीन समय में श्रेष्ठ शिल्पकारी है। मंदिर में स्थित खंभों से मधुर धुन निकलती है, जिससे श्रद्धालुओं में कौतहूल रहता है। इन खंभों से घंटी जैसी मधुर ध्वनि निकलती है। आप इन खंभों से सात रंग के संगीत की धुन निकाल सकते हैं।

इस मंदिर की वास्तुकला इतनी निराली है कि एक ही पत्थर से 48 खंभे बनाए गए हैं। जबकि ये सभी 48 खंभे मुख्य खंभे को घेरे हुए है। इस मंदिर में कुल 161 खंभे ऐसे हैं, जिनसे संगीत की ध्वनि निकलती है। आश्चर्य की बात यह है कि अगर आप एक खंभे से ध्वनि निकालने की कोशिश करेंगे तो अन्य खंभों में भी कंपन होने लगती है। इस विषय पर कई शोध किए गए हैं।

इसमें एक शोध के अनुसार, इन पत्थर के खंभों को तीन श्रेणी में बांटे गए हैं, जिनमें पहले को श्रुति स्तंभ, दूसरे को गण थंगूल और तीसरे को लया थंगूल कहा जाता है। इनमें श्रुति स्तंभ और लय के बीच आपसी संबंध है। जब श्रुति स्तंभ पर कोई टैप किया जाता है तो लया थूंगल से भी आवाज निकलती है। ठीक उसी तरह लया थूंगल पर कोई टैप किया जाता है तो श्रुति स्तंभ से भी ध्वनि निकलती है।

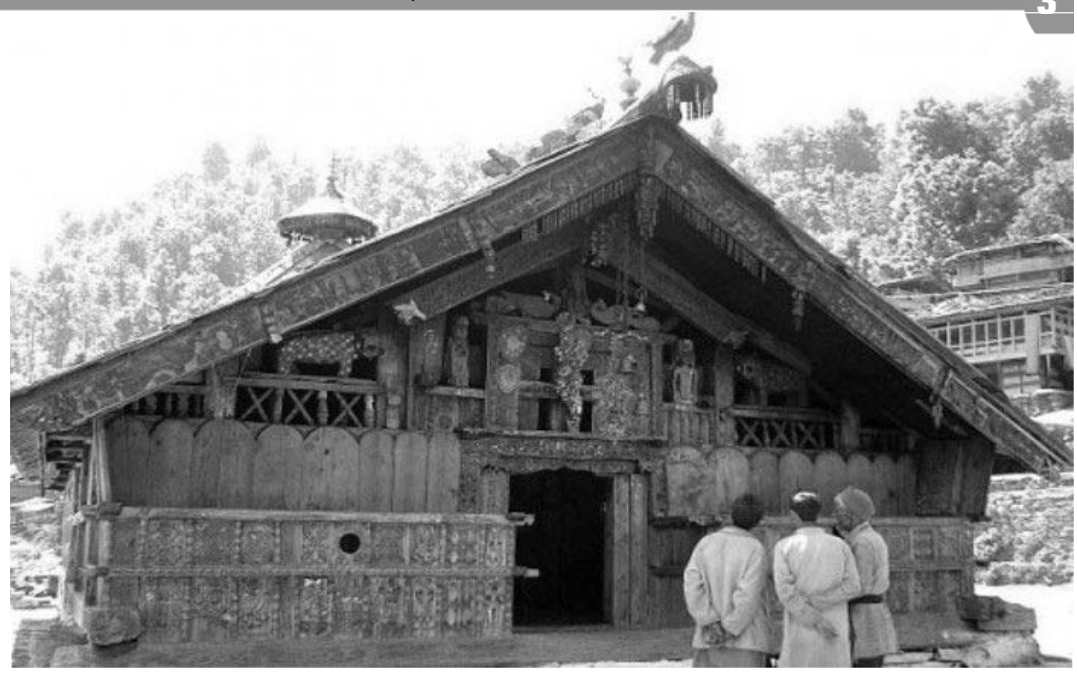

कर्ण और दुर्योधन के मंदिर...

उत्तराखंड के उत्तरकाशी जिले के जखोल में टंस घाटी में दुर्योधन और कर्ण के मंदिर है। दुर्योधन का मंदिर यहां के नेतवार नामक जगह से करीब 12 किमी दूर हर की दून रोड पर स्थित सौर गांव में है।

देहरादून से करीब 95 किमी दूर चकराता और चकराता से करीब 69 किमी दूर नेतवार गांव है। जबकि कर्ण मंदिर नेतवार से करीब डेढ़ मील दूर सारनौल गांव में है...

उत्तराखंड को देवभूमि भी कहा जाता है। यहां हर कदम पर मंदिरों की भरमार है। यहां भूमियां देवता से लेकर ग्वेल देवता, ग्राम देवता और कुल देवताओं की भी मान्यता है। लेकिन इसकी खूबसूरत वादियों में कई ऐसे अनोखे मंदिर भी है, जो कि महाभारत के पात्रों से जुड़े हुए है। इस धरती पर महाभारत के खलनायक दुर्योधन और दानवीर कर्ण की भी पूजा होती है। जी हां, उत्तराखंड के उत्तरकाशी जिले के जखोल में टंस घाटी में दुर्योधन और कर्ण के मंदिर है। दुर्योधन का मंदिर यहां के नेतवार नामक जगह से करीब 12 किमी दूर हर की दून रोड पर स्थित सौर गांव में है। देहरादून से करीब 95 किमी दूर चकराता और चकराता से करीब 69 किमी दूर नेतवार गांव है। जबकि कर्ण मंदिर नेतवार से करीब डेढ़ मील दूर सारनौल गांव में है।

स्थानीय इतिहासकारों का कहना है कि मंदिर के देवता दुर्योधन है लेकिन यहां के लोग इसे कौरव मंदिर मानने से स्वीकार नहीं करते हैं। दुर्योधन के मंदिर को कुछ साल पहले शिव मंदिर में तब्दील कर दिया गया लेकिन इस गांव में अभी भी सोने की परत चढ़ी एक कुल्हाड़ी है जिसे लोग कौरव राजकुमार दुर्योधन की मानते हैं। आज का कर्ण मंदिर बूढ़ी गंगा के पुल के पास स्थित है। माना जाता है कि, महाभारत काल मे गंगाजी, इसी घाट से होकर गुजरती थीं। गंगा जी का प्रवाह इस स्थान से दूर हो जाने की वजह से, अब इस विलुप्त धारा को बूढ़ी गंगाजी के नाम से जाना जाने लगा है। कर्ण घाट से थोड़ा ही दूर, द्रौपदी घाट को बूढ़ी गंगा पुल के विपरीत दिशा मे देखा जा सकता है। कर्ण घाट मंदिर पर सूर्यपुत्र दानवीर कर्ण भगवान शिव की पूजा करने के पश्चात, सवामन सोना प्रतिदिन दान किया करते थे। मान्यता के अनुसार, उसी स्थान 2012 की दीपावली को शिवलिंग की पुनः स्थापना कर दी गयी है। ऐसा माना जाता है कि पास ही मे एक देवी मां का मंदिर था। जो कर्ण को सोना दिया करतीं थीं, आज वो मंदिर विलुप्त हो चुका है या धरती मे समा गया है।

सौर गांव की यह भूमि भुब्रूवाहन नाम के एक महान योद्धा की धरती है। मान्यता है कि पाताललोक का राजा भुब्रूवाहन द्वापरयुग में कौरवों और पांडवों के बीच महाभारत युद्ध का हिस्सा बनना चाहता था। मन में यही चाहत लिए वह धरती पर आया, लेकिन भगवान कृष्ण ने बड़ी ही चालाकी से उसे युद्ध से दूर कर दिया। भुब्रूवाहन कौरवों की तरफ से युद्ध में शामिल होना चाहता था और कृष्ण को अंदेशा था कि भुब्रूवाहन अर्जुन को चुनौती दे सकता है। इसलिए उन्होंने भुब्रूवाहन को एक चुनौती दी। कृष्ण ने भुब्रूवाहन को एक ही तीर से एक पेड़ के सभी पत्तों को छेदने की चुनौती दी, इस बीच कृष्ण ने एक पत्ता तोड़कर अपने पैर के नीचे दबा लिया। भुब्रूवाहन का तीर पेड़ पर मौजूद सभी पत्तों को छेदने के बाद कृष्ण के पैर की तरफ बढ़ रहा था, तभी उन्होंने अपना पैर हटा लिया। कृष्ण किसी भी तरह भुब्रूवाहन को युद्ध से दूर रखना चाहते थे और उन्होंने उसे निष्पक्ष रहने को कहा। निष्पक्ष रहने का अर्थ युद्ध से दूर रहना था और महाभारत के युद्ध से दूर रहना किसी भी योद्धा को मंजूर नहीं होता, इसलिए कृष्ण ने भुब्रूवाहन से पार पाने का रास्ता निकाल लिया। उन्होंने किसी तरह भुब्रूवाहन का सिर उसके धड़ से अलग कर दिया। हालांकि कृष्ण ने युद्ध शुरू होने से पहले ही भुब्रूवाहन का सिर धड़ से अलग कर दिया, लेकिन उसने युद्ध देखने की इच्छा जाहिर की और भगवान कृष्ण ने उसकी इच्छा पूरी की। उन्होंने भुब्रूवाहन के सिर को यहां एक पेड़ पर टांग दिया और उसने यहीं से महाभारत का पूरा युद्ध देखा। स्थानीय लोगों का कहना है कि जब-जब भी महाभारत के युद्ध में कौरवों की रणनीति विफल होती, जब-जब भी उन्हें हार का मुंह देखना पड़ता, तब भुब्रूवाहन जोर-जोर से चिल्लाकर उनसे रणनीति बदलने के लिए कहता था। वो रोता था और आज भी रो रहा है।

• भूलकर भी...

गुरुवार को न करें य

गुरुवार का दिन भगवान श्रीहरि विष्णु को समर्पित होता है। इस दिन भगवान श्रीहरि विष्णु करने का विधान है। साथ ही इस दिन कई चीजों को करने की मनाही होती है, जिनमें बाल कटवाना, नाखून काटना और बालों को धोना सहित कपड़े धोना शामिल हैं। जैसा कि हम सभी जानते हैं कि गुरुवार के दिन बृहस्पति देव की पूजा उपासना की जाती है। ऐसी मान्यता है कि इस दिन इन चीजों को करने से गुरु कमजोर होता है, जिससे घर की सुख सम्पत्ति और धन का ह्रास होता है। हालांकि, इसके पीछे कई मिथ्या है जिसके चलते इन चीजों की मनाही है। ऐसी मान्यता है कि इस दिन बाल कटवाने से बृहस्पति देव नाराज हो जाते हैं। इससे व्यक्ति को अनचाही संकटों का सामना करना पड़ता है। ऐसे में सभी लोग इस दिन बाल कटवाने, नाखून काटने और शेविंग करने से बचते हैं। प्राचीन समय में बिजली उपलब्ध नहीं होने के चलते लोग शाम में झाड़ू नहीं लगाते थे। वे ऐसा सुरक्षा कारणों से करते थे। अंधेरे में झाड़ू लगाने से सांप अथवा बिच्छू के दंश का खतरा रहता था। आधुनिक समय में इसे प्रथा मान लिया गया है।

• चिड़िया का घोंसला...

कहा जाता है कि अगर किसी घर में चिड़िया या गिलहरी अपना घोंसला बना ले, तो उस घर में सुख शांति, धन समृद्धि की कोई भी कमी नहीं होगी। इसलिए अगर वो आपके घर में घोंसला बना ले तो उसे हटाना नहीं चाहिए। अगर आप किराए के घर में रहते हैं और वहां चिड़िया घोंसला बना ले, तो यह आपके लिए भी शुभ शकुन है। भविष्य में आपका भी घर बन सकता है। जिन लोगों को अपना मकान खरीदने या बनाने की इच्छा है लेकिन कोई न कोई रूकावट आ रही है तो वह रविवार से शुरू करके रोज सुबह गाय को गुड खिलाएं।